Research Inspiration ISSN: 2455-443X
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 1, Issue-IV
Sep. 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

पुराणानुसार गंगा नदीः एक परिचय

सरोज कुमारी
संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला (हिमाचल प्रदेश)–171005
भारत

सरांश

गंगा नदी का इतिहास इस देश में वैदिक काल से ही प्रारम्भ हुआ है। गंगा को वैदिक साहित्य ने प्रमुख स्थान दिया है। ऋग्वेद में गंगा नदी का प्रमुख रूप से वर्णन आता है, जिससे स्पष्ट होता है कि गंगा नदी वैदिक काल से ही पूजनीय रही हैं। पुराणों में इसे देवी के रूप में बताया गया है। स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण की कथा का उल्लेख किया गया है। राजा भगीरथ इसे स्वर्ग से धरती पर लाये थे, जिससे सारा देश पवित्र हो गया। गंगावतरण की कथा देश के साहित्य को प्रभावित करती है। पुराणों ने इसे ब्रह्म, विष्णु, महेश तीनों देवताओं से जोड़ा है। यह भगवान् विष्णु के चरणों को धोने वाली हैं और उन्हीं के चरणों से निकलती हैं, इसे विष्णुपदी भी कहा जाता है। इस दृष्टि से विष्णु के चरणों से निकलकर वह शिव के जटाजूट में गिरती हैं। अतः शिव तथा विष्णु दोनों की प्रिय है, जिसे माता का दर्जा दिया गया है। ब्रह्म के कमण्डलु में जल रूप में रहने के कारण ब्रह्म को भी अतिप्रिय हैं। इसी कारण गंगा किनारे बसे तीर्थ सभी देवताओं के तीर्थ हैं। कलियुग में गंगा को ही एक पवित्र तीर्थ माना गया है। स्वर्गलोक से पृथ्वी लोक में गमन करने के कारण यह गंगा कहलायीं हैं। पुराणों के अनुसार इसे हिमालय की ज्येष्ठ पुत्री बताया गया है, इन्होंने योगाग्नि के बल से देवी माहेश्वरी को पुत्री के रूप में प्राप्त किया था। गंगा की अनेक धारायें हैं जो अनेक दिशाओं में जाने के कारण अनेक भेदों वाली हो जाती है। इसके जल के प्रवाह में पितरों के लिये तर्पण किया जाता है तथा यजन करके इहलोक तथा परलोक का लाभ प्राप्त किया जाता है।

पुराणानुसार गंगा नदीः एक परिचय

गंगा नदी को भारतीय धर्मग्रन्थों में पवित्र नदी माना गया है। यह केवल एक नदी ही नहीं, बल्कि एक संस्कृति है। इसके तट पर अनेक पवित्र तीर्थ हैं। गंगा जी वैदिक काल से ही पूजनीय तीर्थ रही है, क्योंकि ऋग्वेद के नदी सूक्त में सर्वप्रथम गंगा का ही आह्वान किया गया है।[1] गंगा शब्द गम् धातु से गन्+टाप् प्रत्यय प्रयुक्त करने पर निष्पन्न माना गया है।[2]

Research Inspiration ISSN: 2455-443X
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 1, Issue-IV
Sep. 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

देवी गंगा का स्वर्ग से धरती पर उतरना गङ्गावतरण कहा गया है।[3] राजा सुहोत्र के पुत्र, एक प्राचीन राजा ने गंगा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। जब गंगा नदी भगीरथ की तपस्या के द्वारा स्वर्ग से इस धरती पर लायी गयी तो जल के बहाव के कारण राजा जह्नुकी यज्ञशाला आप्लावति हो गई जिससे क्रुद्ध होकर जह्नु ने गंगा का पान कर लिया। तब देवता, ऋषि और विशेषकर भगीरथ ने उनके क्रोध को शान्त किया। तब जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा के अपने कानों के द्वारा बाहर निकालने की अनुमति दी। इसलिए गंगा जह्नु पुत्री समझी गई और उसे जाह्नवी, जह्नुतनया, जह्नुनन्दिनी आदि नामों से पुकारा गया।[4]

महाभारत के अनुसार भगवान् शंकर गङ्गा जी को सिर पर धारण करके देवताओं के साथ पर्वतों में श्रेष्ठ कैलास को चले गये। कैलास पर्वत शिव का निवास स्थल और देवों एवं गन्धर्वों से सेवित है, इसी पर्वत पर राजा भगीरथ ने तपस्या की। गंगा का प्रथम प्रवाह यही से शुरू हुआ है। राजा भगीरथ गंगा जी के साथ समुद्रतट पर जाकर वरूणालय समुद्र को बड़े वेग से भर दिया और गंगा जी को अपनी पुत्री बना लिया।[5]

एक उल्लेख के अनुसार सतयुग में सभी स्थल पवित्र थे, त्रेता में पुष्कर सर्वाधिक पवित्र था, द्वापर में कुरुक्षेत्र तथा कलियुग में गंगा।[6] वह गंगा गोलोक, वैकुण्ठ लोक, शिवलोक और ब्रह्मलोक में परमात्मा की आज्ञा से आयी। अतः गमन करने के कारण वह गङ्गा कहलायीं।[7] वराह पुराण में गङ्गा की व्यत्पत्ति गां गता बतलायी गयी है अर्थात् जो पृथ्वी की ओर गयी है।[8] स्त्रोतों से अंश रूप में धरती पर आने के कारण यह नदी देवी गंगा के नाम से प्रसिद्ध हुयी।[9] यह क्षीर के समान जल वाली और ऊँची तरङ्गों वाली है। वैकुण्ठ लोक से यह ब्रह्मलोक में आयी और वहाँ से स्वर्ग लोक में तथा स्वर्गलोक से हिमालय के मार्ग द्वारा बड़ी प्रसन्नता से इस पृथ्वी लोक में आयी।[10] अर्थात् स्पष्ट है कि यह हिमालय के मार्ग से गमन करने के कारण गंगा नाम से प्रसिद्ध हुयी।

गंगा की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन गोपी और गोपिकाओं से व्याप्त राधा महोत्सव के अवसर पर शिव के संगीत पर अत्यन्त मुग्ध हुये कृष्ण–राधा के द्रवीभूत अङ्गों से गंगा की उत्पत्ति हुई।[11] त्रिपथगामिनी गङ्गा मन्दाकिनी के रूप में स्वर्ग में, गंगा रूप में पृथ्वी पर तथा भोगवती रूप में पाताल में प्रवाहित हुई है।[12] इसकी पहली धारा आकाश मं ताराओं से मण्डित आकाशगङ्गा, दूसरी धारा पृथिवी पर गिरी, जिसे अत्रि ऋषि ने मन्दाकिनी रूप में प्राप्त किया।[13] इस प्रकार हिमालय से सब लोकों को पवित्र करने वाली अद्वितीय गंगा उत्पन्न हुई। हिमालय ने योगाग्नि के बल से देवी माहेश्वरी को पुत्री रूप में प्राप्त किया।[14] ब्रह्म पुराण के अनुसार कमण्डलु में स्थित रहने वाली देवी गङ्गा महेश्वर के मस्तक की जटा में प्राप्त हुई थी।[15] शिव की जटाओं में स्थित रहने वाली जो जलस्वरूपा है, उनको पृथ्वी पर लाने के लिये दो रूपों का कथन है। उसका एक भाग व्रत और दान की समाधि वाले गौतम ब्राह्मण के द्वारा भगवान् की पूजा करके

Research Inspiration ISSN: 2455-443X
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 1, Issue-IV
Sep. 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

लाया गया था।[16] देवी गंगाजी का दूसरा अंश जो महान् बलवान् क्षत्रिय राजा के द्वारा परम दुष्कर तपस्या और नियमों के द्वारा देवषङ्कर की आराधना करके लाया गया था। इस प्रकार राजा भगीरथ के द्वारा दूसरा भाग यहाँ पर समाहृत हुआ था। इस तरह से देवी के दो स्वरूप (गौतम तथा भगीरथ द्वारा) हुये थे।[17]

भागवतपुराण के अनुसार जहाँ–जहाँ भगवान् की पूजा होती है और पुराणों में प्रसिद्ध गंगादि नदियाँ जहाँ हों, वे सभी स्थान परम कल्याणकारी हैं।[18] अग्नि पुराण में उल्लेख है कि जब तक किसी मनुष्य की अस्थि गंगाजल को स्पर्श करती रहती है तब तक वह स्वर्गलोक में प्रसन्न रहता है।[19]

गंगा भारतवर्ष की एक पुण्यातोया नदी है जो विष्णु जी को अतिप्रिय है। इसे माता का दर्जा दिया गया है तथा यह भगवद् रूप कहीं गयी है। गंगीतीर्थ माहात्म्य के विषय में कहा गया है कि माघ के समान कोई मास (महीना) नहीं है, सतयुग के समान कोई युग नहीं है, वेदों के समान कोई अन्य शास्त्र श्रेष्ठ नहीं है और गंगा तीर्थ के समान कोई तीर्थ श्रेष्ठ नहीं है।[20]

यह पृथ्वी पर मनुष्यों को तारती है, नीचे पाताल लोक में नागों को तारती है और द्युलोक में देवताओं को तारती है, इसलिए यह त्रिपथगा कही गयी है।[21] यह सभी पवित्र वस्तुओं से अधिक पवित्र और सभी मङ्गलकारी पदार्थों से अधिक माङ्गलिक है। महेश्वर के मस्तक से होकर इस लोक में आने के कारण यह सभी पापों का हरण करने वाली और शुभ है।[22] सतयुग में अनेक तीर्थ होते हैं, त्रेतायुग का श्रेष्ठ तीर्थ पुष्कर है और कलियुग में गङ्गा की ही विशेषता है।[23] चार दिशाओं में जाने से वह एक ही गंगा सीता, अलकनन्दा, चक्षु और भद्रा–इन चारो भेदों वाली हो जाती है।[24] इसके प्रवाह में पुत्रों द्वारा पितरों के लिये श्रद्धापूर्वक किया हुआ एक दिन का भी तर्पण उन्हें सौ वर्षों तक दुर्लभ तृप्ति देता है। गंगा के तट पर राजाओं ने महायज्ञों से यज्ञेश्वर भगवान् पुरुषोत्तम का यजन करके इहलोक और स्वर्गलोक में परमसिद्धि का लाभ प्राप्त किया है।[25]

कूर्म पुराण के अनुसार राजा बलि से तीन पग भूमि माँगने पर भगवान् वामन जी ने ब्रह्मण्ड के ऊपरी कपाल को भेदकर पुनः वह चरण ब्रह्माण्ड के दिव्य आवरणों में चला गया जिसके भेदन होने से पुण्य करने वालों द्वारा सेवित वह शीतल महाजल नीचे गिरा। तभी से आकाश में स्थित वह नदियों में श्रेष्ठ नदी प्रवर्तित हुई, जिसे ब्रह्म ने गंगा नाम से सम्बोधित किया।[26]

भागवत पुराण के अनुसार ब्रह्म ने भगवान् के चरणों का प्रक्षालन करने के लिए जो जल अर्पित किया, वही उनके चरणों के नख से निकलकर गङ्गा रूप में प्रवाहित महादेव सहित सारे जगत् को पवित्र करता है।[27] भगवान् विष्णु के चरणों को धोने के लिये नदियों में श्रेष्ठ गंगा जी प्रकट हुई थी, जिनके पवित्र जल को मस्तक पर धारण करने के कारण स्वयं मङ्गलरूप महादेव जी और भी अधिक मङ्गलमय हो गये।[28]

Research Inspiration ISSN: 2455-443X
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 1, Issue-IV
Sep. 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

विष्णु पुराण के अनुसार विष्णु पद से देवांगनाओं के अंगराग से पाण्डुवर्ण हुई सर्वपापहारिणी गंगा जी उत्पन्न हुयी हैं। उनके वाम चरणकमल के अँगूठे के नखरूपी स्त्रोत से निकली हुयी उन गंगा जी को ध्रुव (शिव) दिन–रात अपने मस्तक पर धारण करते हैं।[29] गंगा जी के जल में खड़े होकर प्राणायाम परायण सप्तर्षिगण उनकी तरंगभंगी सं जटाकलाप के कम्पायमान होते हुये गंगाजी के विस्तृत जल समूह में आप्लावित होकर वे अघमर्षण मन्त्र का जप करते हैं तथा चन्द्रमण्डल के क्षय होने के बाद पुनः पहले से भी अधिक कान्ति धारण कर लेता है, वे गंगाजी चन्द्रमण्डल से निकलकर मेरुपर्वत पर गिरती हैं और संसार को पवित्र करने के लिये चारों दिशाओं में जाती है।[30]

चतुर्मुख ब्रह्मा का मन भी मलिन रहता है तो इस संसार में दूसरे जन्तुओं की तो क्या बात है, इस बात पर विचार करके माता ने इस जगत् को पावन करने के लिये अनेक उपयों द्वारा देवी गंगा का अवतार लिया था। यही भगवान् सदाशिव की विभूति है।[31] स्कन्दपुराण के अनुसार राजा भगीरथ जिसने कपिल मुनि की क्रोधाग्नि से अश्वमेध यज्ञ से समन्वित अपने पूर्वजों को तथा सगर के पुत्रों को निर्दग्ध सुनकर, सूर्यवंश में उत्पन्न महान् तेजस्वी और परम धार्मिक राजा ने देवी गंगाजी की आराधना करने तथा घोर तप करने का निश्चय किया था।[32] इसने समस्त राज्य का त्याग करके पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय पर्वत पर घोर तप करके अपने पूर्वजों के उद्धार के लिये गंगा जी की पूजा की। ब्रह्म शाप से भस्माभूत हुये राजा सगर के पुत्रों को त्रिपथगा देवी के बिना किसी में इतना सामर्थ्य नहीं था, जो उन्हें स्वर्ग पहुँचा सके।[33] गंगा के तट पर तप करके मुनिगण, सिद्ध पुरुष, गन्धर्व और जो अन्य देवों में परम श्रेष्ठ हैं, वे सभी स्वर्ग लोक में स्थायी रूप से निवास करते हैं। यहाँ पर तप करने का विशेष फल प्राप्त होता है, क्योंकि इसके तट पर जो पुष्पों वाले वृक्ष हैं वे पारिजात (स्वर्ग) वृक्ष के समान हैं जो समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले होते हैं।[34]

निष्कर्ष

गंगाजी के विषय में स्पष्ट होता है कि भगवती गंगा एक नदी ही नहीं; अपितु आस्था निष्ठा एवं श्रद्धा का दिव्य प्रवाह है। यह हमारी दैहिक शुद्धता तथा आत्मिक चेतना का केन्द्र है। हिन्दुओं की यही कामना मात्र रहती है कि उन्हें जीते जी गंगा का सान्निध्य प्राप्त नहीं हुआ, तो मरणोपरान्त केवल उनकी अस्थियाँ माँ गंगा के आँचल में विसर्जित हो जायें तो जीवन सफल हो जायेगा। अतः भगीरथी की अमृतमयी धारा प्रत्येक के लिये मोक्ष का साधन है। मनुष्य के पापों को धोने के लिये ही यह इस भूलोक में अवतरित हुई हैं क्योंकि जब राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ को पूर्वजों के उद्धार की चिन्ता सताती है, तो वे गंगा को धरती पर लाने का संकल्प लेते हैं जिससे संसार के सभी प्राणियों का उद्धार हुआ जो आज भी प्राणियों की आस्था का प्रतीक है।

Research Inspiration ISSN: 2455-443X
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 1, Issue-IV
Sep. 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

पाद टिप्पणियाँ :

1. इमं में गङ्गे यमुने सरस्वती शुतुद्रि स्तोम सचता पुरूषणया।
आसिक्नया मरूद्वधे विपस्तयार्जीकीये श्रृणुह्य सुपोषया।। ऋग्वेद, 10.75.5
2. संस्कृत–हिन्दी–कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ०, 328
3. ज्ञान–शब्द–कोश, पृ०, 197
4. संस्कृत–हिन्दी–कोश, पृ०, 402
5. गङ्गाया धारण कृत्वा हरो लोकनमस्कृतः।
कैलास पर्वतश्रेष्ठं जगाम त्रिदशैः सह।
समासाद्य समुद्रं च गङ्गाया सहितो नृपः।।
पूरयामास वेगेन समुद्रं वरूणालयम्।
दुहितृत्वे च नृपतिर्गङ्गां समनुकल्पयत्।। महाभारत, 3.109.16–18
6. धर्मशास्त्र का इतिहास, तृतीय भाग, पृ०, 1320
7. गोलोक च स्थिता गङ्गा वैकुण्ठे शिवलोके।
ब्रह्मलोके तथान्यत्र यत्र–यत्र पुरा स्थिता।
तथैव सा गता गङ्गा चाज्ञया परमात्मनः।। ब्रह्मावैवर्त पुराण, 2.11.139–140
8. यथोद्देशं सा चानेकशतसहस्रपर्वतानां।
दारयन्ती गां गतेति गङ्गेत्युच्यते वराह पुराण, 82.10
9. गमागता स्त्रोतसोंशाद गङ्गा तेन प्रकीर्तिता।। ब्रह्मवैवर्त पुराण, 4.34.1
10. वैकुण्ठाद् ब्रह्मलोकञ्च ततः स्वर्गं समागता।।
स्वर्गाद्धिमाद्रिमार्गेण पृथिवीमागता मुदा। वही, 2.75.25,16
11. गोपैर्गोपाभिः आकीर्णे शुभे राधा महोत्स्वे कार्तिकी पूर्णिमाजातां ताः।
शिव संगीत संमुग्ध श्रीकृष्णाङ्गं द्रवोद्भवामद्रव द्रव सम्भूतां तां गङ्गा प्रणार्म्यहम।। ब्रह्मवैवर्त पुराण, 2.20.114, 116
12. मन्दाकिनीति दिवि भोगवती चाधो।
गङ्गेति चेह चरणाम्बु पुनाति विश्वम्।। पद्म पुराण, 6.267.47
13. त्रिशूलाभि हतान्मार्गात् तिस्त्रोधारा विनिर्ययुः।
एका गगनाक्रम्य स्थिता ताराभिमण्डिता।।
द्वितीयान्यपतद् भूमौतां जग्राह तपोपधनः।
अत्रिस्तस्माद् समुद्भूतौ दुर्वासा शंकरांशतः।। वराह पुराण, 2.46–48
14. गङ्गा हिमवतो जज्ञे सर्वलोकैकपावनी।
स्वयोगाग्निबलाद् देवीं लेभे पुत्रीं महेश्वरीम्।। कूर्म पुराण, 12.22,23
15. कमण्डलु स्थिता देवीमहेश्वरजटागता।। ब्रह्म पुराण, 34.1
16. महेश्वरजटास्था या आपो देवो महामते।
तासां च द्विवधो भेद आहुतुंर्द्वयकारणात्।।
एकांशो ब्राह्मणेनात्र व्रतदानसमाधिना।
गौतमेन शिव पूज्य आहृतो लोकविश्रुतः।। ब्रह्मपुराण, 34.2–3
17. अपरस्तु महाप्राज्ञ क्षत्रियेण बलीयसा।
आराध्यं शङ्कर देवं तपोभिर्नियमैस्तथा।।
भगीरथेन भूपेन आहृतोऽशोऽपरस्तथा।
एवं द्वैरूप्यमभवद्गङ्गाया मुनिसत्तम्।। वही, 34.4–5
18. यत्र–यत्र हरेरर्चा स देशः श्रेयसां पद्म।
यत्र गंगादयो नद्यः पुराणेषु च विश्रुतः।। भागवत पुराण, 7.14.29
19. यावदस्थि च गङ्गायां तावत्स्वर्गे स तिष्ठति। अग्नि पुराण, 110.4
20. न माघव समो मासो न कृतेन युगंसमम्।
न च वेदसमं शास्त्र न तीर्थं गङ्गाया समम्।। स्कन्ध पुराण, वैषाख–माहात्म्य, 2.1
21. क्षितौ तारयते मर्त्यान् नागांस्तारयतेऽप्यधः।
दिवि तारयते देवांस्तेन त्रिपथगा स्मृता।। कूर्मपुराण, 32.30
22. पवित्राणां पवित्रं च मङ्गलाना च मङ्गलम्।
महेश्वरात् परिभ्रष्टा सर्वपापहरा शुभा।। वही, 35.35
23. कृते युगे तु तीर्थानि त्रेतायां पुष्करं परम।
द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गा विशिष्यते।। वही, 35.36

Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 1, Issue-IV
Sep. 2016
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

24. सीता चालकनन्दा च चक्षुर्भद्रा च संस्थिता।
एकैव या चतुर्भेदा दिग्भेदगतिलक्षणा।। भागवत पुराण, 2.8.113

25. दत्ता पितृभ्यो यत्रापस्तनयैः श्रद्धयान्वितैः।
स्माशतं प्रयच्छन्ति तृप्तिं मैत्रेय दुर्लभाम्।।
यस्यामिष्ट्वा महायज्ञैर्यज्ञेशं पुरुषोत्तमम्।
द्विज भूपाः परां सिद्धिमवापुदिवि चेह च।। वही, 2.8.117.118

26. भित्त्वा तदण्डस्य कपालमूर्ध्वं
जगाम् दिव्यवरणानि भूयः।
अथाण्डभेदान्निपपात शीतलं
महाजलं तत् पुण्यक्द्विश्च जुष्टम्।
प्रवर्तते चापि सरिद्वरा तदा।
गङ्गेत्युक्ता ब्रह्मणा व्योमसंस्था।। कूर्म. पुराण, 16.55–56

27. अथापि यत्पादनखावसृष्टं जगद्विरञ् चोपहृतार्हणम्भः।
सेशं पुनात्यन्यतमोमुकुन्दात् को नाम लोकेभगवत्पदार्थः।।

28. यच्छौचनिः सृतसरित्प्रवरोदकेन तीर्थेन मूर्ध्न्यधिकृतेन शिवः शिवोऽभूतः।। वही, 3.28.22

29. ततः प्रभवति ब्रह्मन्सर्वपापहरा सरित्।
गङ्गा देवाङ्गनाङ्गा नामनुलेपनपिञ्जरा।।
वामपादाम्बुजाङ्गुष्ठनखस्त्रोतोविनिर्गताम्।
विष्णोर्बिभति यां भवत्या शिरसाहर्निषं ध्रुवः।। विष्णु पुराण, 2.8.108–109

30. ततः सप्तर्षियो यस्याः प्राणायामपरायणाः।
तिष्ठन्ति वीचिमालभिरुह्यमानजटा जले।।
वार्योघैः सन्ततैर्यस्याः प्लावितं शशिमण्डलम्।
भूयोऽधिकतरां कान्तिं वहत्येतदुह क्षये।।
मेरुपृष्ठे पतत्युच्चैनिष्क्रान्ता शशिमण्डलात्।
जगतः पावनार्थाय प्रयाति च चतुर्दिशम्।। वही, 2.8.110–112

31. चतुर्मुखस्यापि मनो मलीनं,
किमन्यजन्तोरिति चिन्त्य माता।
गङ्गावतार विविधैरुपायैः,
सर्वजगत्पावयितुं चकार।।
विभूतिरेषा तु सदाशिवस्य।। ब्रह्मपुराण, प्रथम खण्ड, 35.20–21

32. निर्दग्धान्सागराञ्छ्रुत्वा कपिलक्रोधवह्निना।
अश्वमेधाश्वसंयुक्तान्पूर्वजान् स्वान् भगीरथः।।
सूर्यवंशे महातेजा राजा परमधार्मिकः।
आरिराधयिषुर्गङ्गा तपसे कृतनिश्चयः।। स्कन्दपुराण, काशी खण्ड, 50.3–4

33. हिमवन्त नगश्रेष्ठममात्यन्यस्तराज्यधूः।
जगाम यशशां राशिरुछिधीर्षुः पितामहान्।।
ब्रह्मशापाग्निनिर्दग्धान्महादुर्गतिगानपि।
विना त्रिमार्गगां! को जन्तंस्त्रिदिव नयेत्।। वही, 50.5–6

34. मुनयः सिद्धगन्धर्वा ये चान्ये सुरसत्तमाः।
गङ्गातीरे तपस्तप्त्वा स्वर्गलोकेऽच्युतताभवन्।।
पारिजातसमाः पुष्पवृक्षाः कल्पद्रुमोपमाः।
गङ्गातीरे तपस्तप्त्वा तत्रैश्वर्यलभन्ति हि।। पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड, 27.11–12